॥ श्री गुरुदेव प्रसन्न ॥

लहरी भजनावली

हिन्दी भाग २ रा

रचियता

संत श्री जैरामदास उर्फ लहरीबाबा
कामठा

किमत ५-०० रुपये

॥ श्री गुरुदेव प्रसन्न ॥

ॐ

लहरी भजनावली

हिन्दी भाग २ रा

(जुनी आवृत्ती वरून)

卐

रचियता

संत जैरामदास उर्फ लहरीबाबा
कामठा

किमत ५-०० रुपये

प्रकाशक :

संत श्री जैरामदास उर्फ लहरी बाबा

प्रबंधक, लहरी आश्रम कामठा.

त. गोंदिया जि. भंडारा (महाराष्ट्र)

पुस्तक मिळण्याचे ठिकाण :

श्री लहरी आश्रम कामठा.

त. गोंदिया जि. भंडारा.

जुनी आवृत्ती वरुन पुनं मुद्रित २००० प्रति

दिनांक ३० नोव्हेंबर १९९८

सर्वाधिकार प्रकाशकाचे स्वाधीन.

किमत ५-०० रुपये

मुद्रक :

नव दुर्गा प्रिंटींग प्रेस,

राम मंदिर वार्ड, भंडारा-४४१९०४

फोन नं. ५४४३०

* भूमिका *

प्यारे मित्रों यह मानव जन्म बडेहि भाग्य से प्राप्त हुआ हैं। इस अनमोल योग का लाभ पानेंके लिये अधिक से अधिक प्रयत्न करना ही मानव जन्म का परम कर्तव्य हैं। क्योंकि हम लोग अज्ञानता के कारण ईश्वर को भूलकर पथ भ्रष्ट हो गये हैं। इसीलिये हमें अनेंक कष्ट और चौऱ्यासी लाख योनी भोगना पड़ा।

मित्रों! परमात्मा के दर्शन करना याने पराई आत्मा कि सेवा करना यही परमात्मा का सच्चा दर्शन हैं। इसके लिये कुछ साधन और नियम है, जैसे :- भजन, पूजन, किर्तन, श्रवण, मनन, ध्यान आदि इन्हीं साधनों द्वारा, मनुष्य इस चंचल मनको नियंत्रण में ला सकता है। ऐसा मेरा अनुभव हैं। जबतक मानव स्वयंम् अपने ही अनुभव से पराई पीड़ नही जान सकता तबतक उसे मानब कहलाने का अधिकार ही नही हैं।

संसार में कोई किसी का मित्र नहीं, और कोई किसी का शत्रु नही है, उसके आचरण तथा व्यवहार ही उसे अच्छे अथवा बुरे मार्ग कि ओर इगीत करते है। सर्व प्रथम कर्मही साधने की आवश्यकता है, जबतक हमारे कर्म अच्छे नहीं होंगे तबतक धर्म की परिभाषा हम समझ ही नहीं सकेंगे इसीलिये कर्म प्रधान माना गया है, जैसे :-

"कर्म प्रधान बिश्व करि राखा। जो जस करे सो तस फल चाखा"

जबतक मनुष्य का मन पवित्र, निर्मल नही होता तबतक भजन पुजन, कितंन आदि यह कैसे सभव हो सकते है ? इसीलिये प्यारे भाईयो दुर्गूणों को त्याग कर, मलीन मनको स्वच्छ

बनाकर जनता जनार्दन कि सेवा करना तबही ईश्वर भक्तिक लाभ संभव है । अखिल विश्व यह मंदीर है, और इसमें निवास करनेवाले मनुष्य ही ईश्वर की मुर्ति स्वरूप है ऐसेहि जानकर उनकी, तन-मन-धन से सेवा करना ही सच्ची ईश्वर पूजा है । जबतक मनुष्य पराई आत्मा की सेवा नही कर सकता तबतक उसे ईश्वर की सच्ची पहिचान नहीं हो सकती । जैसे :–

"आत्मा नहीं जाने तो, परमात्मा कैसे पहचाने"

इसलिये दु:खी आत्माकी सेवा करके पुण्यका संग्रह करना चाहिये विद्वानोंने कहाभी है कि:– "बडे भाग्य मानुस तन पाया" जब बडे भाग्य से मानव जन्म मिला तो, अब मोक्ष प्राप्ति के लिये मानव धर्मका भी ध्यान रखना ही पडेगा ? कहीं ऐसा न हो जाय की अज्ञानवश हम फिर पथभ्रष्ट हो गये तो वही चौऱ्यासी लक्ष योनी और वही असंख्य कष्ट भोगनें पडेगे यह निश्चित है । सेवा करने से मेवा मिलता है । पहले साधुसंत महात्माओंने विविध प्रकार से सेवा करके अपना जीवन सफल किया है । इसी तरह किसीभी प्रकारसे सेवाधर्म अपनाकर यह मानव जन्म सफल बनाना चाहिये । जब सेवा सच्चे मन से की जायेगी तो उसका फल निश्चित है, यह मिथ्या नही हो सकता ।

मानव जन्मको छोड़कर और किसीभी जन्ममे सेवा करने का अवसर प्राप्त नहीं हो सकता । कायिक, वाचिक व मानसिक यह सेवा के मुख्य प्रकार है । इसलिये मेरे मित्रों किसी भी प्रकार से परमेश्वर की सेवा करना चाहिये यही मेरी सविनय प्रार्थना है ।

कामठा आश्रम
माघ शुक्ल पक्ष सप्तमि
वि. सं. २०१८
ई. स. ४-१२-१९६१

जैरामदास

※ अनुक्रमणिका ※

भ नं.	भजन	पृ. नं
१	गुरुजी मुझको भवबंधन से छुडाना	१
२	चरणों में तेरे मेरा साथ रहे	२
३	भोली भोली अँखियां	२
४	यह तन छोडकर प्यारा	३
५	खोया खोया रे जीवन सारा खोया रे	४
६	प्यार दिया तो नटना क्या	५
७	हो जा काम में तैयार	५
८	माता बहनो सुनलो कहना हमारा	६
९	तू सोच समझकर देख जरा	७
१०	जिसे लागी लगन प्रभु भक्ति की	८
११	बाई तुम न होना पति पर नाराज	९
१२	हरदम हीं रहे प्रभु ध्यान तेरा	९
१३	ये विनती सुन लेना	१०
१४	जरा सोच समझ मन बावरे	११
१५	प्रभु सभी के पालन हारे	११
१६	छोड दो वक्त गमाने का	१२
१७	गुरुदेव तुम्हारी असीम कृपा से	१३
१८	चंचल मेरा नाम	१४
१९	तु आंखे खोलकर देख जरा	१४

अ. नं.	भजन	पृ. नं.
२०	मेरे श्याम सलोने आजा	१५
२१	करता नही काम	१५
२२	जाग जावो सोने वाले जाग जा	१६
२३	काम करो और मिलके रहो	१७
२४	आपत्ती में नहीं सहारा	१८
२५	कसोटी मेरी बहुत हुई है	१९
२६	जमुना के तीर प्रभु ने	१९
२७	आवो मेरे माता भाई	२०
२८	सुन ले अरे इन्सान	२१
२९	दिल मेरा चाहे	२१
३०	चली २ रे उमर बीत चली रे	२२
३१	क्यों करता दूसरे की भलाई	२३
३२	जग मे इन्सान है	२४
३३	प्यारे भाई तुम ना नशा करना	२४
३४	पियो प्रेम रस का प्याला	२५
३५	ईश्वर अंश सभी जीव है	२५
३६	भाई प्रेम नगर वो जाना	२५
३७	प्यारे भाई अपने को आप	२६
३८	भाव भक्ति द्रढ मन में	२६
३९	प्यारे भाई मन को प्रभु में	२७
४०	किसान भाई जाग जानारे	२७
४१	किसान भाई अन्न पका	२८
४२	प्यारे राम भक्ति के दिवाने	२८
४३	बैठे मन आलसी	२९
४४	देश पियारे ये	२९

संत श्री जैरामदास उर्फ लहरीबाबा

आश्रम : कामठा, त. गोंदिया, जि. भंडारा (महाराष्ट्र)

जन्म तारीख- ७।१२।१९२२

भजन १ (तर्ज : भैया मेरे राखी के बंधन को)

गुरुजी मुझको भव बंधन से छुड़ाना,
गुरुजी मुझको भव बंधन से छुड़ाना,
आ करके मुझको बचाना, बचाना ॥ टेक ॥

कितने दिन से इस माया में भूलकर खाया हूँ मैं गोता।
विषयों के लहरों में सदा ही, देखो मारा मारा फिरता।
शरण तुम्हारे लगाना, लगाना ॥ १ ॥

स्वार्थ के कामों में प्यारे, भाई बहन सब अपनाते।
आती मुसीबत जब बदन पर, तब फिर कोई साथ न देते।
प्रभु न मुझको फँसाना, फँसाना ॥ २ ॥

ऐसा है दुनिया का फंदा, परमार्थ में लाते अड़ंगा।
द्वेष के मारे करते दंगा, भूलते हरदम ही सत्-सगा।
सीधा मार्ग दिखाना, दिखाना ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे गरूनाथा, मैं अज्ञानो से ही भटकता।
तुम्हरे गुण को गाते रहता, गुण ऐसा दो सत्-गुरू नाथा।
अपने से मुझे मिलाना, मिलाना ॥ ४ ॥

भजन २. (तर्ज : जीवन में पिया तेरा साथ रहे)

गुरूदेव तुम्हारे चरणों, सच प्रेम का नैनों से नीर बहे ॥टेक॥

भरपूर भरा रहे प्रेम तेरा, जुदा न रहे मेरे दिल मन से।
होते रहे दर्शन पल पल में, मैं जाऊँ न कहीं तेरे कदमों से ।
अवगुन प्रभु मेरे हरते रहे, सच प्रेम का नैनों से नीर बहे ॥१॥

हरदम में प्रभु दु:ख देते रहो, कहीं भूल न होवे तेरे भक्ती की ।
मैं तुझमे रहूं तू मुझमें रहे, लीला है अजव तेरे शक्ति की ।
यह काम क्रोध डर जाता रहे सच प्रेम का नैनों से नीर बहे ॥२॥

दिवाना बनाले अपना तू, हरदम ही लगन तेरी लगी रहे ।
तेरे ही गुण मै गाते रहूं, दूजा भाव न मेरे दिल में आये ।
द्वेष भाव ये तन से जाता रहे, सच प्रेम का नैनो से नीर रहे ॥३॥

निर्भय वनके तेरा नाम जपू, यह अर्ज है मेरी दयालु हरी।
यह विनय मेरी तुम सुनते रहो, अब दौड़ के आवो गिरधारी ।
प्रभू लाज रखो 'जैराम' कहे, सच प्रेम का नैनों से नीर बहे ॥४॥

भजन ३. (तर्ज : जादूगर सैंया सुन मेरे भैया)

भोली भोली अखियां, मोहनी मुरतीया,
सुनलो मेरी बात, प्रभु अब दर्शन दो ॥टेक॥

तुम हो भोले नन्द लाडले, गोपिन के हो प्यारे ।
गिरधर नागर दया के सागर, मोहन हो रखवारे ।
जैसे दिये पांडव को साथ, प्रभु अब दर्शन दो ॥१॥

भारत आजा दर्श दिखाजा, करदे सारी लीला ।
अब भी तुम भारत न आये, जग बनता अलबेला ।
दौड़ो दौड़ो दिनों के नाथ, प्रभु अब दर्शन दो ॥२॥

दास चरण का, भूखा दरश का, अर्ज करूं मै तेरी ।
'जैरामदास' कहें सुन प्रभूजी, तोड़ोज़न्म की फेरी ।
सुन सत्य नाम की बात, प्रभु अव दर्शन दो ॥३॥

भजन ४. (तर्ज : है अपना दिल तो आवारा)

यह तन छोड़ के प्यारा, प्राण अकेला हो जायेगा,
अमर है ज्ञान उजियारा, अगर प्रभू ध्यान लगायेगा ॥टेक॥

धन दौलत ये सारी, क्या करेगी विचारी ।
हैं सबसे लाचारी, हैं सबसे लाचारी ।
साथ ना दे ये घर द्वारा ॥१॥

वहन और भाई, या औरत सबही ।
फिर लड़का वोही, फिर लड़का वोही ।
यहाँ पर छोड़ ये परिवारा ॥२॥

सत्य की कमाई, कमाले मेरे भाई ।
साथ देगी तुझेही साथ देगी तुझेही ।
इसी से होगा भवपारा ॥३॥

प्रभु बिन सारा ये झूठा है पसारा ।
संत देते हैं इशारा संत देते हैं इशारा ।

चमकता नैनों का तारा ॥ ४ ॥

कहता है जयराम जायेंगे निजधाम ।
मिलेंगे घनश्याम मिलेंगे घनश्याम ।
वो ही है सबका रखवारा ॥ ५ ॥

भजन ५ (तर्ज : तेरा जादू न चलेगा सपेरे)

खोया खोयारे जीवन सारा खोयारे, अपने जीवन सार्थक नहीं कियारे
श्वास बिषयों में व्यर्थ गमाया रे, सत संगत में समय न दियारे ॥ टेक ॥

बालक पन खेल में खोया, नाहक क्यों तू भर माया ।
क्या खोया तू क्या है पाया, किस कारण यहाँ पर आया ।
मायाने तुझे भूलाया रे ॥ १ ॥

तरूण पन जब चल आया, नारी संगत में भरमाया ।
हरि भक्तीं को ठुकराया, नित अहं भाव समाया ।
अज्ञान से तू भूल खायारे ॥ २ ॥

चवथा आश्रम आया तुझे, दमने किया तयारी ।
बेबस जान हुई तेरी, अग ये कापे भारी ।
क्षीण हो गई तेरी काया रे ॥ ३ ॥

जो कुछ अब तक तूने किया, अब तो पल मत खोय ।
'जैरामदास' कहें सुनले, गफलत में मत सोय ।
अपने जिवन का सार्थक नही कियारे, भाग्य से नर-तन पाया रे ॥ ४ ॥

भजन ६. (तर्ज : प्यार किया तो डरना क्या)

बचन दिया तो नटना क्या, जिसे वचन दिया तो ।
प्राण प्रभुको निछावर किया, फिर मुसीबत में घबराना क्या ।।टे.।।

चाहे जैसे संकट आये, कदम हिम्मत से आगे बढ़ाये ।
सुख और दुःख में आनंद मनाये ।
दुनिया के झंझट से करना क्या ।।१।।

प्रभुके चरण में मन को लगाया,सत् निर्भयता से व्यवहार किया।
बन गया व ही प्रभु मत वाला ।
जगत रूठने से होगा क्या ।।२।।

वचन दिया था हरिश्चन्द्रने, स्वप्न में राज दिया था उसनें ।
डोम के यहाँ विक्री हो करके ।
वचन को अपनें भूला था क्या ।।३।।

जैराम तू दया हिय मे धरले, प्रभु के चरण में मन को लगाले ।
निर्भयता से कार्य करते जा ।
काल से अब डरना क्या ।।४।।

भजन ७. (तर्ज : लेके पहिला, पहिला प्यार)

हो जा काम में तैयार, ना रह गफलत में तू यार
नही तो जीवन होगा तेरा बेकार ।।टेक।।

कर्तव्य को अपने, क्यों भूलता है ।
बुराई मे आयुष्य को, क्यों खोता है ।

धरले समय का तू ज्ञान, क्यों बनता है रे नादान ॥ १ ॥

व्यवहार तो देखो तेरा, झुटाई का ।
सचाई तो कभी भी, नहीं तूने सीखा ।
अब तो सत्यता को पाल, छोड़ दे कु-मार्ग की चाल ॥ २ ॥

देख रहा तू, सुत–नारी सपना ।
भूला है क्यों तू, हरि नाम जपना ।
हो जा अब तो भी होशियार समय ना आवे बारम्बार ॥३॥

जैरामदास कहे, प्रभु को न भूलना ।
चाहे जैसे सकट आये, उससे न डरना ।
अपने कर्म को सुधार, होगा जीवन का उद्धार ॥ ४ ॥

भजन ८ (तर्ज : भैया मेरे राखी के बन्धन को)

माता बहनो सुनलो कहना हमारा ।
पति बिन देव ना दूजा तुम्हारा ।
भूलो ना धर्म तुम्हारा, तुम्हारा ॥ टेक ॥

पति सेवा में तत्पर रहना, आज्ञा उनकी पालन करना ।
सदा पति के आधीन रहना, सुख दुःख मे भी आनंद मनाना ।
जीवन होगा सफल तुम्हारा, तुम्हारा ॥ १ ॥

अपने पति पर संकट आये, नारी जिसको खुद अपनाय ।
धर्म नीति तो यह बतलावे, कसौटी नारी मित्र की होवे ।
लिखा वेद शास्त्र अधारा, अधारा ॥ २ ॥

शील नम्रता दया को धरना, हृदय में ध्यान पति का धरना ।
कार्य को अपने करले जाना, मार्ग मोक्ष का मिले हो तरना ।
अमर हो नाम पियारा, पियारा ॥ ३ ॥

कष्ट बुरे व्यवहार को तज कर, पर नर भ्राता जनक जानकर।
जैराम कहे नेकी अपना कर, माता बहनो जागो तत्पर ।
कटे जन्म मरण का फेरा ॥ ४ ॥

भजन ९ (तर्ज : दिल लूटने वाले जादूगर)

तू सोच समझकर देख जरा, लिखा विधी का टल नहीं सकता ।
चाहे जैसी करो चतुराई, टाले से वह नहीं वो टल सकता ॥ टेक॥

तू संत पूरावे देख जरा, बेदों की ग्वाही लेते जा ।
हर घट में भरा बन्सी वाला, बस वो ही सदा तु देखते जा ।
जितना है तुझको मिलना जो, वह एक नहीं फिर टल सकता ॥१॥

जो कर्म है तेरे करते जा, सुख दु:ख को भी तू सहते जा ।
हरि भजन में मनको लगाते जा, नित-धर्म-नीति पर चलते जा ॥
निर्भय बनकर कार्य कर अपने, जो होनहार नहीं टल सकता ॥२॥

वनवास हुआ था भगवन को, संग लेकर सीता माता को ।
पहले बनवासी वस्त्र सभी, भाई लक्ष्मण था सेवा को ॥
जो लिख दिये है विधाता ने, वह वाक्य कभी नहीं मिट सकता ॥३॥

शका मन भूढ़ ही जन करते, नहीं धैर्य भी हिय में कुछ धरते ।

सत मार्ग से कदम को डगमगाते, सतसंग का गुण नहीं पा सकते ।
प्रभु सत्ता के आधीन है हम, आगे किसका क्या चल सकता ॥४॥

मरना मिटना इस देह को है, आत्मा रुप अमर ज्योती ।
अग्नि से ना ये जल सकती, किसी शस्त्र से भी ना कट सकती ।
जैराम जो जाने स्वरुप अपना, तब मोक्ष पद को पा सकता ॥५॥

भजन १० (तर्ज : मेरा दिल अब तेरा वो साजना)

जिसे लागी लगन प्रभू भक्ती की ।
उसको सुध ना रही खुद के तनकी ॥ टेक ॥

भक्त प्रल्हाद बना था दीवाना, हरी के गुण ही गाय ।
पिता ने उसको दुःख दिया था, नारायण ने बचाया ।
खम्बे से प्रगटी मूरति, नरसिंह की जिसे लागी लगन ॥१॥

मीरा हुई थी प्रभु में दिवानी, पग में घुंघरू पहिनी ।
विष का प्याला पी करके, फिर भजन में हुई मस्तानी ।
नाचे ले करके मूर्ति, श्रीकृष्ण की जिसे लागी लगन ॥२॥

भक्त गोरोबा भक्ती में रंगकर, तन की सुध हो भूला ।
रोंध गया बालक गारेसे, उसपर नजर ना डाला ।
हो गयी मृत्यू, उस बालक की जिसे लागी लगन ॥३॥

भक्त भजनमे लिन देखकर, फिकर पडी भगवनको ।
भक्तो के भगवान ने, फिरसे जिवित किये बालक को ।
ऐसी शक्ती है इस भक्तिकी जिसे लागी लगन ॥४॥

जो कोई जाने मर्म भक्तिका, उद्धार हो जाये उनका ।
जैरामदास कहे छुट जाये, फेरा जनम मरनका ।
है सुदंर बेला मुक्ति की, जिसे लागी लगन ॥५॥

भजन ११ (तर्ज : दिल मनसे गाँऊगा तेरा भजन)

बाई तुम न होना, पतिपर नाराज ।
पति है तुम्हारे भूषण का राज ।। टेक ।।

सुधारो अपने नीति धर्म का रास्ता ।
साथ ना कोई किसी को देता ।
दुनिया में जो कुछ है दिखता ।
मन में दया और, करते जा काम ।।१।।

ये परिवार स्वप्न का मेला ।
आये अकेला और जाये अकेला ।
यह जीव खेले दो दिन खेला ।
कर्म अपनाले, रहेगी सरताज ।। २ ।।

स्वप्न मे कुटीलता का भाव ना आये ।
भ्रात पितासम पर नर पाये ।
जीवन आदर्श वृत बनवाये ।
त्रिलोक में उसकी गूंजती, आवाज ।।३।।

'जैरामदास' कहे सुनलेवो ।
पति के बिन सत् गति न पावो ।
अंत काल में शुभ से छुडावो ।
जैसी राखी सावित्री ने, धर्म की लाज ।।४।।

भजन १२ (तर्ज : दिल ही में नहीं जब शांति मिले)

हरदम ही रहे प्रभु ध्यान तेरा, फिर भूल न होवे इस नैनों से ।
जल में थल में सबमें तु है, कहीं दूर न हो इन पलकों से ।।टेक।।

निर्भयता से गाते ही रहुं, मैं तुम्हारा गुण-गान प्रभु ।
गर मुसीबत आयी रास्ते में, छोडू ना नाम तुम्हारा प्रभू ।

क्र जोड़ता अर्ज सुनो इतनी, अब मुक्त करो भव बन्धन से ।।१।।
आया हूँ भिखारी दरपे तेरे, यह प्रेम की झोली भर देना ।
थी जनम जनम की यही, अबके नादर मे ठुकराना ।
यही विनती है ईश्वर मेरी, धन धन दौलत ना मांगु तुमसे ।। २ ।।
यह तन से प्राण निकल जाये, प्रभु भूल न होवे तेरे चरणों की ।
फिर रास्ता सरल रहाँ होगा, हमें याद रहे सत् कर्मों की ।
ऐसी ही ज्ञान हमें दे दो, देखूँ न दुजा तुम्हें नैनों से ।। ३ ।।
जैराम कहे माया तेरी, अब तूही भरा सब घट व्यापक ।
कृपा करो दीन दासों पर, जड़ जीवों का तू ही रक्षक ।
पत्ता न हिले तेरे मर्जी से ये ज्ञान मिले एक सत् गुरु से ।। ४ ।।

भजन १३ (तर्ज : मिलेंगे **जोरा जोरी**, आना चोरी चोरी)

ये विनती सुन लेना, कभी न ठुकराना, वो प्रभुजी चैन न तुम्हारे बिना ।
भव बंधन से छुड़ाना है भक्तिका निशाना, जो हमको बनाले अपना ।टेक।
हम दोनो बचपन के साथी, साथ में खेल रचाये ।
ग्वाल बाल सब आये थे, कुंजन अपनी रास रचाये ।
पुराने बन्शी की धुन सुनाना ।। १ ।।
एक गुरू के हम विद्यार्थी, साथ में खेला करते थे ।
आज्ञा गुरू की पालन करके, सरपे लकडी ढोते थे ।
भैया भूख लगी हमको कुछ मांगकर खाना ।।२।।
कुछ भी नही ये बहाना बताकर, छुपकर चने चबाना ।
मोहन प्यारे मुझको तूने, कदम पे देना ठिकाना ।
गुरू से कपट मित्र से चोरी, क्यों यह जाल रचना ।।३।।
उस दिन से मेरी सुन मोहन, ग्रहदशा है बदली ।
अन्न वस्त्र से दुःखी हुआ हुँ, वैसी स्थिति निराली ।
भगवन मेरे अपराधों को तुम्ही क्षमा कर देना ।।४।।

कृष्ण सुदामा की मित्र कहानी, जो कोई ध्यान में लाये।
जैरामदास कहे इस मार्ग से, सह-जही तर जाये।
अपनालो अब यही मार्ग को, क्यों भ्रम में भरमाना ॥५॥

भजन १४. (तर्ज : तेरा जादू न चलेगा सफेरे)

जरा सोच समझ मन बावरे, काहे घूमता हें चौऱ्यासी फेरे।
क्यों फँसता अज्ञान अंधेरे, षड्-रिपु है साथ में तेरे ॥टेक॥

भटक रहा है जिधर उधर।
हरि चरणों मे ना है नजर।
विषयों में करता है गुजर।
ठहरे ना तू एक पल भर।
ठीक नही है रवैया रे ॥१॥

दुर्व्यसन है तूझको प्यारा।
समय गया सब तेरा।
जीवन तूने ना उद्धारा।
अन्त में काल ने घेरा।
छोड़ दे ख्याल अब बुरे ॥२॥

कितने जिवो का घात किया।
कितनों को उद्धार।
नाम जहाज मिले गुरू से।
तुमसे हुआ छुटकारा।
जैराम कहे सुनले रे ॥३॥

भजन १५. (तर्ज : बिन्द्रा बन का कृष्ण कन्हैया)

प्रभू सभी के पालन हारे, सबको दर्शन देते है।
जैसी जिसकी श्रद्धा है, फिर वैसा उसको मिलते है ॥टेक॥

भक्त जनों ने किया पुकारा, उनको पल में उद्धारा।
अजब लीला है उस हरि हरकी, सबके नैनों का तारा।
सबके उपर दृष्टि इनकी, सबका पूरा करते हैं ।। १ ।।

ग्राहने गजको जल में खीचा, तुम्हारा नाम लिया।
उसके जाने से पहिले, चक्र को भेजा दु:ख मिटवाया।
तूममें ऐसी अमर लीला है, तुम्हें संत वेद गाते है ।। २ ।।

अंजामिलने नाम पुकारा, उसको है पलमें उद्धारा।
पापी होते ही फिर दिया उसे, मोक्ष का द्वारा।
जो नाम पुकारे अन्त में, वे तुममें मिल जाते है ।। ३ ।।

जैरामदास कहे तुम दयालु हो, दु:ख को आप मिटाते हो।
जो जैसी करते है, करनी वैसा ही उसे फल देते हो।
तेरी महिमा का भेद ना जाने, बिरले तुझको पाते है ।।४।।

भजन १६ (तर्ज : रेशमी सलवार कुरता जाली का)

छोड़ दो व्यवहार वक्त गमाने का, समय मिला है आदर्श ग्राम बनाने का।
निष्कपटी निर्व्यसनी बन।
मिलके रहो नर-नारी गण।
सेवामें ही रमकर मन।
अर्पण कर दे अपना तन।
मार्ग धर ग्राम सुधरने का ।।१।।

नित मिल जुल करके रहना।
सत् व्यवहार को ही धरना।
अन्त मे हीम ही करना।
दया क्षमा शांति भी रखना।
मार्ग भव तरने का ।। २ ।।

छल कपटी न रहने पाये ।
सब भावी स्तंभ बनजाये ।
एकता से कदम बढ़ाये ।
नेक काम दिल को भाये ।
राष्ट्र उन्नति का ॥३॥

जैराम कहे सुन भाई ।
व्यर्थ न जीवन को खोई ।
नही द्वेष में किसकी भलाई ।
क्यों करते अपनी बुराई ।
शांती से चलनें का ॥४॥

भजन १७, (तर्ज : सपनों की डोर बनी)

गुरुदेव तुम्हारी असीम कृपा से,कट जाय मेंरे जन्म-मरण के फासे ॥टे.॥

दु:ख दूर करने आवो कन्हैया ।
डगमगती है ये मझधार नैया ।
आंधी का जोर है चारों तरफ से ॥१॥

तूने यह संसार का खेल रचाया ।
जलमें थलमें सभी मे तूही है समाया ।
जुदा न करना मुझे अपने चरणों से ॥२॥

छाया तुम्हारी सब मे भरी है ।
चैतन्य ज्योति दिल में धरी हैं ।
हुआ उजाला इन रोम रोम से ॥३॥

दीन दयालु पुकारा सुनकर ।
अवगुण हरलिये अपना बनकर ।
धन्य हुआ जैराम तुम्हारे दरस से ॥४॥

भजन १८. (तर्ज : छलिया मेरा नाम)

चंचल मेरा मन, रूके न कभी एक क्षण।
बुद्धि तो कुछ काम न करती, कैसा होय मिलन ॥टेक॥

देखा जिधर उधर सब फैला माया का रंग।
सुझता नही अब आगे मुझको होता इससे तंग।
क्षीण हुआ ये तन, कैसे हो रक्षण ॥१॥

निकल रही है उमर ये सारी, दिल मेरा घबराता।
जीवन सफल करने का मन मे सोच बना रहता।
जा रहा दिन रैन, चिंता से ना चैन ॥२॥

दुष्ट वासना बीच मे आकर फास डालकर खैंचे।
लगाकर ये प्रीत प्यारी, सुत नारी ये सोचे।
भूला सत् वचन, कैसा होगा भजन ॥३॥

अनंत है अपराध जो आगे वर्णन नही हो सकता।
जैरामदास कहे ये मन, इधर उधर भरमाता।
दु:खी का रक्षण, तुमसे हो भगवान ॥४॥

भजन १९. (तर्ज : दिल लूटने वाले जादूगर)

तू आंखे खोल के, देख जरा यह वक्त सुवर्ण हो जाता है।
चल उठ त्याग दे तू नींद को,गया अवसर फिर नही आता है ॥टे.॥

सब उमर को अपने खोता है, क्यों गफलत मे भूल जाता है।
इसमे न भलाई हुई किसकी, बेकारी मे क्यों रहता है ॥१॥

पल घड़िया निकलते जा रही, अंजली का नीर जैसे भाई।
जो श्वास गया नही आने का, फिर नरतन भाग्य से मिलता है ॥२॥

बीत गया तेरा काल पिछे, फिर पागल, मन विषयों मे खींचे।
मानवता पर ध्यान ही दे, अब क्यों तू दिवाना बनता है ॥३॥

सुन धर्म नीति से चलते जा, जहाँ पाप कर्म हो डरते जा।
जैराम कहे नींद से जाग जा, नहीं तो यम का कोड़ा पड़ता है ।।४।।

भजन २०. (तर्ज : मेरा दिल ये पुकारे आजा)

मेरे श्याम सलोने आजा, बिगडी को बनाने आजा।
रोम रोम में रमा, है सबमे समा, तेरे दास पुकारे आजा ।।टेक।।

अखिया है भूली, प्रभु हो अब कहाँ।
तेरे बिना सुना सारा, है ये जहाँ।
प्यारी बन्सी की आवाज, गिरधर राखो मेरी लाज,
अपने चरण हमें दिखलाजा ।।१।।

शांति हिय से, ढूंढता हूं तुझे।
दर्शन के बिना तेरे, कुछ ना सूझे।
क्या ऐसी सजा, नहीं कुछ भी मजा।
अब आकर दर्श दिखाजा ।।२।।

कहते मन्दिर तिरथ में, जो रमता तूही।
कोई घट और चराचर को देता ग्वाही।
अर्जी को सुन जा, तेरी जिसमे रजा,
प्रभु चरणों मे मनको लगाजा ।।३।।

कोई कहते सेवा ध्यान मे है भाई।
साँच झूठ क्या है बता दो सही।
यही कहता हे जैराम, जब पाऊँगा आराम,
आके भ्रम को मेरे तू मिटा जा ।।४।।

भजन २१. (तर्ज : छलिया मेरा नाम)

करता नही काम, चाहता है आराम, व्यवहार तेरा लपझप झुठा,
होता है बदनाम ।।टेक।।

जुवा सट्टा गाँजा दारू, इसमें मग्न रहता।
गर्व गुमान की बात बताकर, आयुष्य अपना खोता।
पैसा नही छदाम, नेकी तेरी हराम ॥१॥

बैर द्वेष भाव समता के, झगड़े तू फैलाता।
बींचमें रहतीं तेरी दलाली, धनको जो तू लूटता।
आयुष्य खोता तमाम, करके बुरे काम ॥२॥

दया भावना थोडी न मन मे, देता धर्म को धोखे।
दीन गरीबों को फँसवाने के, कैसे देखे मौके।
लोफरो में मुक्काम भूलता सत्य नाम ॥३॥

जैरामदास तुझे समझाता, छोड़ तू ऐसे धन्दे।
सत्य राह को लेते जाना, टुटे वो चौऱ्यासो फन्दे।
करले सेवा काम, भजकर सीताराम ॥४॥

भजन २२. (तर्ज : रुक जावो जाने वाले रुक जा)

जाग जावो सोने वाले जाग जा चोर खड़े हैं सामने।
क्यों सोता तू गफलत में, वक्त हैं प्रभु से मिलने ॥टेक॥
बड़े भाग्य से जन्म मिला, माया में हैं तू भूला।
ये समय अमोल चला, जग दो दिन का मेला।
जीव खेल रहा खेला, सब श्वास गमा डाला।
सत् मार्ग से चलने ॥१॥

षड़ विकारों से बचना, सत् संगत को पाना।
नही तो होगा रोना, फिर मुश्किल हैं आना।
सत् गुरू बिना ना रहना, भक्ति को निकट लेना।
इस कर्म भूमि को सम्हलने ॥२॥

यह आखरी समझाना, मान सन्तो का कहना ।
बन्धन से मुक्त होना, सत् मार्ग को धर लेना ।
समय के ज्ञान को धरने ।। ३ ।।

भजन २३ (तर्ज : नैन का चैन लुटाकर)

काम करो और मिलके रहो तुम, सुधारो अपना ग्राम हो ।
अस्पृश्यता को मनसे हटावो, सत् कर्म में प्राण जुटावो ।। टेक ।।

समता से करो काम ।।
आजादी मिली है हमको, मुफ्त ना गमावो समय को ।
सब कोई अपना हाथ बढ़ावो,
अमर रहेगा नाम हो ।। १ ।।

सेवक बनकर काम करेंगे, मातृ भूमि का ऋण हरेंगे ।
तन मन सेवामें अर्पण करे,
तभीं मिले सुखघाम हो ।। २ ।।

समाज शिक्षण लेकर सबही, जीवन सफल करो तुम भाई ।
मिटेगा अज्ञान भेद-भाव का,
बैठो नहीं बेकाम हो ।। ३ ।।

झगड़े तूफान दूर करवाके, दया शांति को हिय में धरके ।
एकता से व्यवहार करो सब,
मिटेगा क्लेश तमाम हो ।। ४ ।।

ऐसे नियम को सब अपनालो, प्रेम भाव नित-नेम बनाओ ।
सेवामें सब कोई लागो,
कहता है जैराम हो ।। ५ ।।

भजन २४ (तर्ज : झूमता मौसम मस्त महिना)

आपत्ति में नहीं सहारा, सुख में कहते मेरा मेरा,
अजब बनाया प्रभु व्यवहार ॥टेक॥

अक्ल मेरी न करती काम, सुख के माया का तुफान।
इससे होता हूँ परेशान, नैया डगमगाती है महान।
न पाते हैं गिरधारी,
अजब लीला है तुम्हारी ॥ १ ॥

हैं पैसे तो रिश्तेदार, वक्त पे किसके सुत और नार।
मतलब का है यह परिवार, इसमें कुछ ना मिलता सार।
कैसा प्रभु ने खेल रचाया,
भेद ना इसका किसी ने पाया॥२॥

धनीं बनाया कितने को, कमी नहीं आभूषण को।
राजपाट देकर उनको, जग ने भुलाया खूब इनको।
धन द्रव्य में मग्न ये रहते,
ऐश आराम में दिन बिताते ॥३॥

अन्न ना मिलता श्रमिकों को, मकान नहीं है रहने को।
रोग ने जकडा कितने को, देखा न जाये नैनों को।
रात दिन श्रम करके,
भूखे रहनें को आते मौके॥४॥

कितने को लगी है तेरी लगन, रहते अपने में आप मगन।
सर्वस्व करके तुझपर अर्पण, करते हैं तेरी नित्य भजन।
जैरामदास शरण में आया,
मूढ मति से वर्णन किया ॥५॥

भजन २५ (तर्ज : देख तेरे संसार की हालत) 'पुत्री शोक में'

कसोटी मेरी बहोत हुई है, अब ना सताओ भगवान
दु:ख से घबराती है जान ॥ टेक ॥

मैं मूरख पामर अज्ञानी, तेरी महिमा कुछ भी न जानी।
ठोकर खाता हूँ मनमानी, धन पुत्र के वश हुआ अडानी।
भूल पडी है तेरे नामकी, वक्त यही नादान,
कृपालु दे दो अमर वरदान ॥१॥

कितनी आपत्ती झंझट पाया, दिवाने पन में है भरमाया।
पुत्र संतान मे मुझे लाया, कुछ दिन बाद तूने छिन लिया।
पुत्र दिया था तीन तूने ही, एक न रखा निशान,
कृपालु दे दो अमर वरदान ॥२॥

कबतक अब तू मुझे भुलाता, मुझ पामर को राह न दिखाता।
अब मैं दु:ख सह नहीं सकता, आगे दिखादे सत् की रास्ता।
नहीं छुटी है मृत्यू भूमि की, कर्म गति बलवान,
कृपालु दे दो अमर वरदान ॥३॥

जैरामदास कहे कुछ बोलो, मुझको-प्रभुजी अब अपनालो।
यह जीवन नैया को सम्हालो, दौडके आकर पार लगालो।
नहीं ममता धन दौलत की, दो सेवा का वरदान।
जिससे हो जावे कल्याण ॥ ४ ॥

भजन २६ (तर्ज : सारी सारी रात तेरी)

जमुना के तीर प्रभु ने खेल रचाया,
खेल में गेंद, डोह में गयारे ॥ टेक ॥

डोह में कालीया नाग रहता था, डोह का पानी कोई न पीता था।
पानी पिया जिसने, जीवित नहीं आयारे ॥१॥

गेंद के लिये प्रभुजी तुरंत ही कूद गये, आवाज सुनते ही नाग नाथ
जागृत हुये ।
क्रोध में आकर, प्रभु के ओर आया रे ॥ २ ॥

ग्वालों ने यशोदा को खबर सुनाई, कूदे कृष्ण कालिंदी में गेंद लेने भाई।
समय बिता मगर, उपर नहीं आये हो ॥ ३ ॥

खबर सुनते यशोदा माता घबराई, काम छोड रोते दौडे तत्पर आई।
विलाप करती, यशोदा मैया हो ॥ ४ ॥

जैराम कहे संकट पर भक्ती बिृद रखते, सच्चो पुकार सुनके दौड़के आते।
दुष्टों का नाश करके, सबको सूखी किया हो ॥५॥

भजन २७ (तर्ज : सारी सारी रात तेरी)

आवो मेरे माता भाई, हरिगुण गायेंगे,
तन मन अर्पण करके, प्रभुको रिझायेंगे,
प्रभुको रिझायेंगे ॥ टेक ॥

सभी मिलकर के बैठो प्रार्थना में, देखो श्री गुरूदेव अनुभव से तनमें।
नीति नियम से, समता दिखायेंगे,
संघटीत होंगे ॥ १ ॥

सदाचार नम्रता हृदय में रखकर, दया,क्षमा,शांति का मार्ग परखकर।
सभी हिल मिल के, फरियाद सुनायेंगे
प्रभु चरण देखेंगे ॥२॥

भाग्य से अमोलिक संधी मिली, ऐसी घड़ी निकलते ही फिर न
मिलने वाली।
धर्म मानवता का ऊँचा उठायेंगे,
दिल बिठायेंगे ॥ ३ ॥

सेवा का ये नारा घरें घर फैलाये, भक्ति मार्ग बिना कोई रहने न पाये ।
आदेश यही सबको सूनायेंगे,
स्वर्ग बनायेंगे ॥४॥

कहे जैरामदास सूनो यही प्रार्थना, जागो कर्म भूमि से तोड़ो यम यातना
अमर सत्य अहिंसा से कदम बढायेंगे,
मोक्ष पद पायेंगे ॥५

भजन २८. (तर्ज : लौटके आजा मेरे मीत)

सुनले अरे इन्सान, धरले ज्ञान, भलाई है ।
सब जीवों को जान समान, रखले ध्यान, भलाई है ॥टेक॥

न दीन को सताना, मान तू कहना, एक दिन है सबको जाना ।
नही देर करना, सुनलो कहना, आखिर है मिट्टी में मिलना ।
सत कहे सत् जान, होगा कल्याण, भलाई है ॥१॥

जीवन सहारा, बैल हमारा, इसने है तनको घिसाया ।
प्राण प्यारा, उपकार सारा, संकट से हमको बचाया ।
न भूल अरे नादान, सुधर अनजान, भलाई है ॥२॥

कर गौ सेवा, भूल मत बाबा, दास जैराम कहता हैं ।
मिलेगी दूआ, मोक्ष पद पावा, आवा गमन छुटता है ।
दया कर दान, भव समान, भलाई है ॥३॥

भजन २९. (तर्ज : सरजो मेरा चकराये)

दिल मेरा चाहे, नित हरिगुण गाये,
विषय सारे, मोह विकारे, दुर्गूण में लपटाय ॥टेक॥

कुटुम्ब कबीला नारी, स्वार्थ के हितकारी,
मोह पास में बांध बांधकर, प्रीत लगाये प्यारी ।

क्षण-क्षण-क्षण, जाता मन, भूल रहा हैं प्रभु भजन।
रह विषयों में, डाले फंदे में, भक्ति को भुलाये ।।१।।

भक्ति पूजा भी करता, चरणन में चित्त ना लगता।
खींचे वासना अष्ट प्रहार, अज्ञान से मन घबराता।
भूल-भूल-भूल, पड़ी है भूल, समझ न आवे ज्ञान का मूल।
मारा मारा फिरता फेरा, चिन्ता आगे आये ।।२।।

ध्यान लेनै को जाता, मन इधर उधर लहराता।
कभी तो धन पुत्र भी दिखाता, भूत प्रेत डराता।
चल-चल-चल आगे चल, सत् गुरू से ले ज्ञान का बल।
जीव अब जाता सार्थक करने ।।३।।

नहीं सन्त-संग को सुनता, जन्म सफल करवाता।
ज्ञान ध्यान में अलग रहा पर; बुरे ख्याल से गिराता।
कहता है दास जैराम, करले पगले इतना काम।
क्यो भूलता है भक्ति मार्ग को तब तक शांति न आये ।।४।।

भजन ३० (तर्ज : चली चली रे पतंग मेरी चली रे)

चली चली रे उमर बीत चली रे, चली चली रे उमर बीत चली रे।
अंजली का नीर, देखो निकले धीरे धीरे,
पल घड़ी ये घटते चली रे ।। टेक ।।

क्षण भगुंर है यह काया; बीता समय जो फिर नहीं आया।
साध साध रे इन्सान दे आयुष्य पर ध्यान,
पछतावेगा पीछे देख देख रे ।।१।।

पूर्व पुण्य से अवसर मिला, आत्म-ज्ञान का नहीं उजाला।
रट-रट हरिनाम, त्याग विषय बुरे काम,
घड़ी बीत चली दुख देख रे ।।२।।

किस कारण आया जगमें, क्यों बैठा है ग़फलत मे ।
क्षण-क्षण न विश्वास, गया श्वास न आये पास,
चल जाग वक्त न आने वाला रे ॥३॥

सून राजा रंक यहाँ आये, प्रभु ने भी अवतार लिये ।
किये किये पुण्य काम, छोड गये अमर नाम,
गाती धर्म नीति यहाँ खुली रे ॥४॥

जीवन मे ना लगा देरी, उमर रही है थोड़ीं मेरी ।
कर-कर नेक काम, तुझे समझाये जैराम ॥

भजन ३१. (तर्ज : तेरे प्यार का आसरा चाहता हूँ)

क्यों करता दुसरों की बुराई, नही है इसमे किसकी भलाई ॥टेक॥

निंदा बिन तुझको क्षण भर चैन ना, लोभ अहंकार में तू बना है दिवाना
छ ड़ झुठा धंदा, कर तू नेक कमाई ॥१॥

देख तू अपना आयुष्य खो रहा है, मेरा मेरा कहकर तू भटक रहा है ।
द्वेष कुटीलता को, छोड़ दे भाई ॥२॥

किस कारण तेरी पैदास हुई है, अज्ञानी व्यवहार में भूल रहा है ।
अब तू सोचले, गर्भ करार को भाई ॥३॥

अपना अपना नाम अमर कर जाना है, जैसा जो कर्म करे वैसा
उसको पाना है ।
ध्यान दे ये कर्म भूमी, नाम है भाई ॥४॥

जैराम कहे क्यों होता तू बदनाम, नेक काम से मिलेगा तूझे आराम ।
दुर्गुणों को छोड़ के, करले प्रभु-ताई ॥५॥

भजन ३२. (तर्ज : ना मैं भगवान हूँ ना मैं शैतान हूँ)

जग में इन्सान हैं, जो जग की शान हैं, इन्हीं के पूण्य से भैया,
धर्म का निशान है ॥टेक॥

नेक काम करे कोई, दया क्षमा रखकर भाई,
अष्ट-पहर मस्त रहता प्रभू चिंतन में ही
उसे ना गुमान हैं, सुख दु:ख समान हैं ॥१॥

तनको झीजाया दुसरों के लिये,
प्राण कुर्बाण करे जग के लिये ।
ऐसा जिसका ध्यान हैं, वही पूज्यवान है ॥२॥

जीव तो सभी एक हैं, ईश्वर के अंश है,
कर्तव्य से भूल पडी, अपने को भूले है ।
ना मानवता का ज्ञान है, ये भूले शैतान हैं ॥३॥

मृग नाभी कस्तूरी, फिर भी घुमें वही दूरी,
अज्ञानता में घूम रहा, चहुँ फेरी ।
जब ये अज्ञान है, खुद की ना पहिचान है ॥४॥

वेद में ही लिखा है, देती ग्वाही गीता है,
कृष्ण ने अर्जून से कहा सब मे निवास है ।
जैराम कहे जो जाने उसको, उसी का कल्याण है ॥५॥

भजन ३३. (तर्ज : करम गती टारत नाही टके रे)

प्यारे भाई तुम ना, नशा करना
प्यारे भाई तुम ना, नशा करना,
एक दिन ऐसा आन पड़े रे, पड़ा जमीन से सोना ॥१॥
नशा किया था राजा रावण नें, पड़ा जमीन से सोना ॥२॥
द्रोपदी चीर खींचे दुशासन, मन में पड़ा शरमाना ॥३॥

नशा करोंगे ऐसी भाई, भोगोगे यम का सताना ॥४॥
जैरामदास कहे नशा वो करलो, मिल जाये भगवाना ॥५॥

भजन ३४ (निरंजन माला घट में)

पीवो प्रेम रस का प्याला ॥टेक॥
मीराबाई ने पी गई प्याला, दर्श दिये गोपाला ॥१॥
पाँच साल का ध्रुव बालक, प्याला पीकर बना मतवाला ॥२॥
हरि नाम का नशा करे, कटे पाप की बेला ॥३॥
जैरामदास कहे अब पिवों, समय न आने वाला ॥४॥

भजन ३५. (निरंजन माला)

ईश्वर अंश सभी जीव है, गवाही दे शास्त्र पुराण ॥१॥
सच्चे कर्म को करले भाई, मिट जाय अभिमान ॥२॥
पाप कर्म को भोग के प्यारे, दु:ख भोगेगा महान ॥३॥
जैरामदास कहे परमात्मा को, जानले आप समना ॥४॥

भजन ३६ (तर्ज : गुरुदेव हमारा प्यारा)

भाई प्रेम नगर को जाना, तुझे वही लगेगा ठिकाना ॥टेक॥
प्रेम नगर की क्या कहूँ बाते, लगते प्रभु चरण से नाते,
फिर जन्म मरण कट जाते।
सुख मिले वहाँ मन माना ॥१॥
धर्मनीति की राह परखना, मानवता पर ध्यान नित देना,
हाथ से न समय गमाना।
फिर मुश्किल नर-तन पाना ॥२॥

संवसे प्रेम करते हम भाई, जिसमे होती अपनी भलाई,
है घड़ी अमोलिक आई।
हो भव सागर तराना ॥३॥
जैरामदास कहे सून लेना, सार्थक जीवन का कुछ तो करना,
नही माया मे भरमाना ॥४॥

भजन ३७ (तर्ज : कर्म गति टारत नाही टरे रे)

प्यारे भाई अपने को आप भूला ॥टेक॥
मैं मैं कहकर भूल रहा तू, मारग अपना भूल रहा तू।
तेरा मोह माया मे ठेला ॥१॥
तेरा मन है कपट भाव में, फेरे लेता इस जीवन मे।
किया न खुद का भला ॥२॥
धन संपति जोरू लड़के को, छीन लिया है इसमें तन को।
दो दिन का ये मेला ॥३॥
कहे जैराम अब जागो भाई, करलो अपनी आगे भलाई।
जन्म न फिर से मिला ॥४॥

भजन ३८ (तर्ज : बिन्द्रा बन का कृष्ण कन्हैया)

भाव भक्ति दृढ मन में रखके, जो कोई सेवा करते है।
उनके बस मे प्रभुजी होकर, काम उन्ही के करते है ॥टेक॥
ध्यान उन्ही का जो कोई धरते वही प्रगट हो जाते है।
चक्र सुदर्शन कर में लेकर गरूड़ सवारी आते है ॥१॥
छ़ल कपटी दुष्टों को जानकर, दूर-दूर प्रभु रहते है।
उनका सारा गर्व मिटाकर, लाज भक्तों की रखते है ॥२॥
धर्म परिक्षा हरिचन्द्र की, विश्वामित्र ने ली आके।
दान पूरा करने को तीनो जन, काशी क्षेत्र में बिके जाके ॥३॥

जैरामदास कहे ऐसे है, भक्त जनों के हितकारी।
कृष्ण सुदामा कंचनपूर दे, बृद बालाक वह गिरधारी ॥४॥

भजन ३९ (तर्ज : तेरे प्यार का आसरा)

प्यारे भाई मनको प्रभु में लगाना भवसागर से हो जाय तराना ॥टे ॥
सत्य नाम को तू भजले प्यारे, आखिर को तो जाएंगे सारे।
मानवता का सार्थक करना प्यारे ॥१॥
जिस कारण से आये जग में, भूल न जाय इस माया में।
नीति को न कभो भी बेच के खाना ॥२॥
भाई अब जाग जा करले कमाई, पूण्य ही होंगे तेरे सहाई।
जैराम कहे बन जा उसका दिवाना ॥३॥

भजन ४० (तर्ज : नौ जवान जाग जाना रे)

किसान भाई जाग जाना रे, आलस को त्याग देना रे ॥टेक॥
आज तक के कपटियों नें तुझको भूलाया।
लूग लूटके तेरे धनको जी खाया।
कपटीयों को छोड़ देनारे सत्य सेवा लग जाना रे ॥१॥
नही मिलता है वस्त्र और दाना।
रहने और खानेका नही है ठिकाना।
अवतो भी सम्हल जानारे गफलतमे नही रहना रे ॥२॥
आया है भाई अब ऐसा जमाना।
जो जोते खेतो बोहो किसाना।
संत विनोबा का कहना रे थोडासा तो मान लेना रे ॥३॥
जैराम कहे लगावो सत्य का नारा।
तब लगे भारतकी नाव किनारा।
अज्ञान को हटा देना रे राम राज्य का निशाना रे ॥४॥

भजन ४१. (तर्ज : छुप छुप खड़े हो)

किसान भाई अन्न पके भरपूर रे ।
तब गरीबों का दुःख होगा दूर रे ॥टेक॥
तेरी कमाई पर पलते है सारे, आलस नींद को तज दे प्यारे ।
सत्य सेवा मे जाग जा, तब मिले सार रे ॥१॥

तू है भारत का ही सरताज, तेरे भरोसे चलता है काज ।
मिल जाय राष्ट्र को, तेरा आधार रे ॥२॥

मिलकर सेवा का नारा लगायेंगे, अमीर गरीब का भेद मिटायेंगे ।
ऐसी है संतो की, वाणी यही पूकारे ॥३॥

जैराम कहे इसमे मान मिले भारी, अन्न भर-पूर की करले तैयारी ।
भारत की दीनता में, तब ही सुधार रे ॥४॥

भजन ४२ (तर्ज : खोलो नैन पिवो ब्रम्ह प्याला)

प्यारे राम भक्ति के दिवाने, उनको ज्ञानी लोक पहिचाने ॥टेक॥
मूढ़ कहते उन्हे दिवाना, भेद बिरले ने है जाना ।
अज्ञानी मारे ताने ॥१॥

मोह माया में रह कर निराले, जल में कमल पता जस खिले ।
संग करले तभी पहिचाने ॥२॥

सत्य सेवा धर्म के लिये, देश विदेश घूमत जाये ।
सुख दुख को एक से माने ॥३॥

जैरामदास कहे दीवाने, उन्हे दीवाने ही पहिचाने ।
रहते भक्ति में मस्ताने ॥४॥

भजन ४३. (तर्ज :- रुक जा वो जाने वाले)

बैठे मत आलसी बैठे मत, हो जा अब तैयार तू ।
इसमें भला नहीं तेरा, ध्यान मत दे इस पर तू ।। धृ ।।

यह काल भी बीत चला, आयुष्य गमा डाला ।
धन पुत्र में है तू भूला, तेरा कौन है रखवाला ।
कर सार्थक अपने में, जा सत्त गुरु चरणन में ।।१।।

सत् राह को तू छोडा, बुरे ख्यालों में भूला ।
भगवान से मुंह मोडा, कर विचार अब थोडा ।
क्यों रहता सपनों में ये, गर्व न रखना मन में ।।२।।

देख अपनी बुराई को, क्यों छलता दुसरों को ।
इसमें सुख ना मिला किसको अब छोड कुटीलता को ।
जैराम कहे नर तन में, लाग प्रभु के ध्यान में ।।३।।

भजन ४४. (तर्ज:- राम पिया रे थे रखवारे)

देश पियारे थे रखवारें, जनता पुकारे प्यार से,
बापू बापू बापू ।।टेक।।

पराधीन की बेडी तोडकर, आजादी दिलवाये ।
ऊँच नोंच का भेद मिटाकर, समता सदेश दिये ।
मानव धर्म अधारे ।।१।।

सत्य अहिंसा अपनाकर, खादी को बनवाये ।
संगठन के पूजक बनकर, द्वेष भाव हटवाये ।
दुखियों के रखवारे ।।२।।

वस्त्र हीन को वस्त्र दिलाके, खादी भूषण धारे ।
तन पे लंगोटी प्राण आखिर तक, चले ये लाठी के सहारे ।
कष्ट भोगे हो सारे ॥३॥

झूठ अन्याय की चिड मानकर, सत्य ही ईश्वर माने ।
तन मन धन अर्पण करके भूमि को, शांति अहिंसा जाने ।
जैराम तुमको पुकारे ॥४॥

–: इति :–